उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में उनकी व्यावसायिक रूचि का अध्ययन''

प्रतिभा रानी (शोधकर्त्री)
मेवाड़ विष्वविद्यालय
चितोड़गढ, राजस्थान

सारांश :- मानव परमात्मा की अनुपम कृति है। यह अनुपम कृति निरन्तर विकासशील होने के साथ-साथ भौतिकता की पराकाष्ठा को छुने के लिए उद्धृत रहता है। जो मानव को भौतिक रूप से समृद्ध एवं खुशहाल तो अवश्य करेगा परन्तु आध्यात्मिक पक्ष, समाज के आदर्श से विमुख कर रहा है। यही कारण है कि इश्वर की सर्वोत्तम कृति मानव आज संत्रस्त दिखाई पड़ रहा है। व्यक्ति हताशा, कुण्ठा, निराशा एवं व्यावसायिक दुश्चिन्तता की मानसिकता से ग्रस्त है। हमारा रोजगार जीविकोपार्जन का माध्यम मात्र ही नहीं अपितु यही समाज में हमारी भूमिका को निर्धारित करता है।

प्रमुख शब्द :- पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, व्यावसायिक रूचि, छात्र एवं छात्रा, उच्चत्तर माध्यचिक विद्यालय।

प्रस्तावना :-

मानव के आन्तरिक जन्मजात गुणों का प्रकाशन शिक्षा के बिना संभव नहीं है। वैदिक काल में भी ऋषि मुनियों ने शिक्षा के महत्व को प्रदर्शित करते हुए कहा है कि - ''सा विद्या या विमुक्तये'', अर्थात शिक्षा के द्वारा व्यक्ति के अन्दर जो दुर्गुण एवं कुसंस्कार छिपे हुए होते हैं उससे मुक्ति मिलती है। ऋषि मुनियों ने शिक्षा को मुक्ति के सर्वश्रेष्ठ साधन के रूप में स्वीकार किया है। इसीलिए शिक्षा को मानव का तृतीय नेत्र की संज्ञा से परिलक्षित किया गया है, यथा-'ज्ञानं मनुजस्य तृतीय नेत्र''। इस प्रकार हमारे देश में शिक्षा व्यवस्था को इतना महत्व दिया गया है कि मनुष्य जीवन के प्रारंभिक 25 वर्ष शिक्षा अर्जित करने हेतु लगाया जाता है। इसलिए कहा गया है कि मानव जीवन के प्रथम 25 वर्षों में अगर विद्यार्जन नहीं किया तो उसका मानव जीवन ही व्यर्थ है।

परंतु आज वैज्ञानिकों का युग है एवं इस वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक कारकों के महत्व को प्रमाण की भी आवश्यकता नहीं है। व्यावसायिकरूचि, अभिरूचि विभिन्न विषयों के अध्ययन अध्यापन का महत्वपूर्ण कारक है।

अध्येता जिस विषय को जितनी रूचिपूर्वक पढेगा उसका शिक्षण प्रतिफल भी उतना ही सकारात्मक होगा। अतः शिक्षण के लिए यह अत्यावश्यक है कि समय-समय पर उसका मूल्यांकन हो तथा समयानुसार मूल्यांकन प्रणाली में परिवर्तन भी हो। क्योंकि बदलते परिवेश में मानव जीवन को प्रकृति सबसे अधिक प्रभावित करती है, मानव के आन्तरिक एवं वाह्य गुणों के साथ-साथ उसकी रूचि, अभिरूचि एवं व्यावसायिक रूचि को भी प्रभावित करती है। अतः शिक्षा व्यवस्था में शिक्षार्थी के शैक्षिक एवं व्यावसायिक रूचि का मापन समय-समय पर होना चाहिये जिससे वे अपने जीवन में तदनुकुल व्यवसाय का चयन कर सके, एवं इन्हीं वस्तुओं के आधार पर व्यक्ति अपने लिये कुछ सामान्य सिद्धांतों का निर्धारण कर लेता है। शिक्षक होना बड़ी साधना है। शिक्षक वही है जो प्रसुप्त समस्याओं को जगा देता है और जिज्ञासा को जागृत कर देता है और बच्चों को उनके स्वयं के अनुसंधान के लिए साहस और अभय से भर देता है। शिक्षक ही सभ्यता का दीपक जलाए रखने में सक्षम है। हमारे देश के निर्माण में उनका योगदान बहुमूल्य रहा है। और अभी भी रह सकता है यदि वे अतीत की परम्पराओं का पालन कर मनुष्य, समाज और राष्ट्र के उत्थान पर ध्यान दें।

शिक्षक जब अपनी शिक्षा पूर्ण कर शिक्षा सम्बन्धी व्यावसायिक पाठ्य क्रम करता है तो शिक्षण की अनेक प्रक्रि याओं एवं पद्धतियों से परिचित होता है किन्तु जब वह वास्तविकता के धरातल पर शिक्षक की भूमिका में आता है तो उन पद्धतियों, प्रक्रियाओं व मौलिकताओं के लिए अधिक स्थान नहीं होता। जिससे वह हतोत्साहित हो उठता है, एवं

उसकी सृजनात्मक क्षमताए कौशल आदि नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। जिससे कार्य के प्रति रुचि, उत्साह उत्सुकता आदि का ह्रास होने लगता है जिसका कार्य संतुष्टि पर प्रतिकूल प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

अतः इस तथ्य का अध्ययन किया जाना अत्यधिक आवश्यक है कि शिक्षकों का कितना वर्ग इससे प्रभावित हो रहा है जिससे उन कारणों का तुलनात्मक अध्ययनं विश्लेषण किया जा सके जो इस व्यावसायिक रुचि को प्रभावित कर रहे है। बिंधम के अनुसार ''रूचि किसी अनुभव में संविलिन होने व इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है, जबकि विरक्ति उसके दूर जाने की प्रवृत्ति है। गिलफोर्ड के अनुसार शब्दो में ''रूचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने उसके द्वारा आकर्षित होन, उसे पसंद करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है।'' रेमर्स, गेज व रूमेल के अनुसार ''रूचियाँ वास्तव में सुखांत व बुखांत भावनाओं, पसंद या नापसंद के व्यवहार के प्रति आकर्षण व हानिकर्षण से परीलक्षित होती है।

अध्ययन की आवश्यकता :-

सम्प्रति औद्योगीकरण का समय है। इस औद्योगीकरण समय के कारण नितप्रतिदिन नये-नये उद्योगों का प्रादुर्भाव एवं अभिवृद्धि हो रही है। इस परिस्थिति में व्यक्ति किस प्रकार के व्यवसाय का चयन करे जिससे उसकी सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो, यह कठिन कार्य है। अतः समुचित निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है। माध्यमिक विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था के समय ही छात्र अपनी रूचि, योग्यता एवं आकांक्षा के अनुरूप व्यवसाय की ओर आकर्षित होता है। यदि इसी समय छात्रों को व्यवसायिक चयन से संबंधित समुचित निर्देशन मिल जाता है तो वह आजीवन सुखी रहता है तथा अपने व्यवसाय के साथ न्याय भी कर पाता है। इसके विपरीत यदि कोई छात्र अपने स्वेच्छा के विपरीत व्यवसाय में जाता है तो वह उस व्यवसाय के साथ कभी भी तालमेल नहीं बिठा पाता। छात्र माध्यमिक शिक्षा के समय ही यह सोचना प्रारंभ कर देता है कि उसे किस व्यवसाय का चयन करना है जिससे वह उस व्यवसाय के साथ-साथ सामाजिक उत्थान में अपना योगदान दे सके। इस स्थिति में शिक्षार्थी के व्यक्तिगत गुणों एवं व्यावसायिक विकल्पों का बोध कराने हेतु, अनेक प्रकार के मार्गदर्शन व व्यावसायिक अवसरों की आवश्यकता होती है। यह सर्वविदित है कि अनुभव के परिणामस्वरूप उनके रूचियों में परिवर्तन एवं विकास होता है। इस स्तर पर छात्रों की अनेकों अनुभवों को एकत्रित करने के लिए प्रेरित करना चाहिये तभी वह उचित शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकल्पों की जानकारी प्राप्त कर सकेगा तथा तदनुकूल सही निर्णय लेने में समर्थ होगा। इसीलिए छात्रों की शिक्षा एवं व्यावसाय उसके गुण योग्यता एवं अभिरूचि के अनुकूल होनी चाहिये। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य छात्रों के पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में उसकी व्यवसायिक रूचि का अध्ययन करना है जिससे छात्र अपनी रूचि एवं योग्यता के अनुकूल सही व्यवसाय का चयन एवं आकलन कर सके।

समस्या कथन :-

इस शोध का शीर्षक **''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन''** है।

पारिभाषिक शब्दावली :-

व्यावसायिक रूचि :- व्यावसायिक क्षेत्र में अधिकतम सफलता सन्तोष एवं समायोजन हेतु अचित व्यावसायिक रूचियों का विकास ही व्यावसायिक रूचि है अथवा क्रिया द्वारा किसी व्यवसाय के साथ आत्मसात करने का प्रयास ही वास्तव में व्यावसायिक रूचि है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति वस्तुओं या क्रियाओं का चयन करके उसे पसन्द, नापसन्द के रूप में कोटिबद्ध करता है। अतः व्यावसायिक रुचि किसी वस्तु से सम्बन्ध जोड़ने वाली मानसिक संरचना है, जब बालकों एवं बालिकाओं का किसी कार्य के प्रति ध्यान केन्द्रित होता है, तो वह उसकी व्यावसायिक रुचि कहलाती है। जो कार्य व्यक्ति की मानसिक शक्तियों, क्षमताओं, रुचियों, शैक्षिक योग्यताओं, शारीरिक क्षमताओं और व्यक्ति की विशेषताओं के अनुकूल हो तो उससे सम्बन्धित कार्य करने में उसे सुविधा रहती है तथा उन्हीं कार्यों को करने में वह अधिक रुचि प्रकट करता है। व्यवसायों की सफलता व्यक्ति की मानसिक क्षमता व रुचि पर निर्भर करती है।

1. **पारिवारिक वातावरण** :- पारिवारिक वातवरण से अभिप्राय डॉ0 डी0के0 झा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण परीक्षण के द्वारा प्राप्त प्राप्तांक से है।
2. **शैक्षिक उपलब्धिः-** शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्र एवं छात्राओं के 10वीं कक्षा में प्राप्त प्राप्तांक से है।
3. **लिंग (छात्र एवं छात्रा)** :- राजकीय विद्यालयों में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं से है।

शोधकार्य के उद्देश्य :-

शोधकार्य को सही दिशा और दशा प्रदान करने के लिए इस अध्ययन के कुछ उद्देश्य निश्चित किए गए हैं। जो निम्नांकित हैं :-

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की साहित्यिक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वैज्ञानिक क्षेत्र में व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शासन सम्बन्धी क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
4. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की वाणिज्य क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
5. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की रचनात्मक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
6. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की कलात्मक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
7. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की ैषि क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
8. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की प्रवर्तक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
9. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।
10. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की गृह सम्बन्धी क्षेत्र की व्यावसायिक रुचियों की तुलना करना।

शोधकार्य का सीमाड़क्न :- प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित जो सीमा निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित है -

1. सम्पूर्ण विद्यालय के स्थान पर केवल दक्षिणी दिल्ली के आठ विद्यालयों का चयन किया गया।
2. सभी कक्षाओं के स्थान पर केवल उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के ग्यारहवीं कक्षा के छात्रा एवं छात्राओं का चयन किया गया।
3. न्यादर्श हेतु केवल 400 छात्र एवं छात्राओं का चयन किया गया है।
4. स्वनिर्मित प्रश्नावली के स्थान पर मानकीकृत परीक्षणों का प्रयोग किया गया।

साहित्यावलोकन :-

आर.एस. - (2014) इनहोंने प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक रूचियों का विश्लेषण किया, तथा पाया कि शहरी और ग्रामीण शिक्षक-शिक्षिकाओं की रूचियाँ शिक्षकों की तुलना में अधिक उच्च थी, दोनों वर्ग में विज्ञान के प्रति समान रूचि थी, किन्तु शिक्षिकाओं में साहित्य के प्रति अपेक्षाकृत अधिक थी। ग्रामीण शिक्षिकाओं ने शहरी शिक्षिकाओं की तुलना में अध्ययन में अधिक रूचि प्रदर्शित की।

एस. सरस्वती - (2016) ने कक्षा 10वीं के 400 छात्रों पर अध्ययन किया कि क्या व्यतिव की विधाएँ व्यावसायिक रूचि से सम्बद्ध होती है? इन्होंने निष्कर्ष में पाया की छात्रों की व्यावसायिक रूचियाँ उनकी शैक्षिक रूचियों से सम्बन्धित नहीं होती है, तथा व्यावसायिक रूचियों और व्यतिव की विधाओं का परस्पर सम्बन्ध नहीं होता।

श्रीमती सरोज व्यास - (2016) ने 9वीं कक्षा के छात्र-छात्राओं की व्यावसायिक रूचियों का मानसिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन करके निष्कर्ष दिया कि पब्लिक स्कूल के शत प्रतिशत छात्र प्रतिभाशाली थे जबकि केन्द्रीय विद्यालय के छात्र उच्च से औसत बुद्धि लब्धि वाले थे। राजकीय विद्यालय के छात्र सामान्य से निम्न और मन्दबुद्धि वाले थे, उच्च और प्रतिभाशाली छात्रों ने वैज्ञानिक, प्रशासनिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में 90% बुद्धिलब्धि वाले, कलात्मक क्षेत्रों में 74% से 90% तथा औसत और निम्नबुद्धि वाले, साहित्यक और अनुनयात्मक क्षेत्रों में 60% छात्रों ने अपनी रूचि प्रदर्शित की। इन्होंने निष्कर्ष दिया कि बुद्धि लब्धि में विशेष अन्तर नहीं है।

शोध परिकल्पनाएँ -

प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक रूचि के दस पक्षों को सम्मिलित किया गया है तथा परिकल्पनाएँ हर पक्ष से संबंधित बनाई गई हैं। प्रस्तुत अध्ययन में बनायी गई अमान्य परिकल्पनाओं का सांख्यिकी का प्रयोग करके परीक्षण किया गया है। परिकल्पना दो भागों में विभाजित की गई है।

प्रस्तुत शोधकार्य में जो परिकल्पना निर्धारित की गई है वह निम्नलिखित हैं :-

1. पारिवारिक वातावरण का व्यावसायिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

1.1 पारिवारिक वातावरण का साहित्यिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.2 पारिवारिक वातावरण का वैज्ञानिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.3 पारिवारिक वातावरण का प्रशासनिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.4 पारिवारिक वातावरण का वाणिज्यिक रूचि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।
1.5 पारिवारिक वातावरण का रचनात्मक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.6 पारिवारिक वातावरण का कलात्मक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.7 पारिवारिक वातावरण का कृषि कार्य रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.8 पारिवारिक वातावरण का प्रेरक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.9 पारिवारिक वातावरण का सामाजिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
1.10 पारिवारिक वातावरण का गृहकार्य रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

2. शैक्षिक उपलब्धि का व्यावसायिक रूचि के साथ कोई सार्थक संबंध नहीं है।

2.1 शैक्षिक उपलब्धि का साहित्यिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.2 शैक्षिक उपलब्धि का वैज्ञानिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.3 शैक्षिक उपलब्धि का प्रशासनिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.4 शैक्षिक उपलब्धि का वाणिज्यिक रूचि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।
2.5 शैक्षिक उपलब्धि का रचनात्मक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.6 शैक्षिक उपलब्धि का कलात्मक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.7 शैक्षिक उपलब्धि का कृषि कार्य रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.8 शैक्षिक उपलब्धि का प्रेरक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.9 शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2.10 शैक्षिक उपलब्धि का गृहकार्य रूचि के साथ कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

3. छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक रूचि में कोई कोई अन्तर नहीं होता है।

3.1 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य साहित्यिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.2 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य वैज्ञानिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.3 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य प्रशासनिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.4 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य वाणिज्यिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.5 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य रचनात्मक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.6 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य कलात्मक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.7 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य कृषि कार्य रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.8 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य प्रेरक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.9 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3.10 माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के मध्य गृहकार्य रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्शचयन :-

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श का चयन निम्न प्र कार किया गया है-

1. जनसंख्या-दक्षिणी दिल्ली में स्थित सरकार द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को शामिल किया गया है।
2. प्रतिदर्श- दक्षिणी दिल्ली में स्थित सरकार द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में से 10 विद्यालयों के 11वीं कक्षा का चयन किया गया जिसमें 5 बालक एवं 5 बालिका विद्यालय हैं।

इस प्रकार कुल 10 विद्यालयों में 410 छात्र-छात्राओं को प्रश्नावली दी गई जिसमें 400 सही एवं पूर्ण रूप से भरे हुए पाए गए।

उपकरण :-

अनुसंधानात्मक समस्या के और परिकल्पना के निर्माण के पश्चात् आँकड़ों का संग्रह करने हेतु उपकरणों अथवा यन्त्रों की आवश्यकता होती है। अनुसंधानकर्त्ता उपलब्ध उपकरणों का विश्लेषण कर अपने उद्देश्य के अनुरूप उपकरण का चयन करता है क्योंकि ऐसा नहीं है कि किसी विशेष उपकरण का ही प्रभुत्व हो। अतः समस्या के स्वरूप एवं परिकल्पना की प्रकृति के अनुरूप उपकरणों का निश्चय होता है।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है :-

1. डॉ. डी.के. झा द्वारा निर्मित पारिवारिक वातावरण परीक्षण।
2. डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र।
3. शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु छात्र एवं छात्राओं के दसवीं कक्षा के अंकपत्र की प्रतिलिपि प्राप्त की गयी।

पारिवारिक वातावरण परीक्षण :-

1. प्रस्तुत शोधकार्य में पारिवारिक वातावरण परीक्षण हेतु डॉ. डी.के. झा द्वारा निर्मित ''पारिवारिक वातावरण परीक्षण'' का प्रयोग किया गया इस परीक्षण में पारिवारिक वातावरण से संबंधित 30 प्रश्न हैं। प्रश्नों का उत्तर देने हेतु (1) सदैव, (2) प्रायः, (3) यदा-कदा, (4) स्वल्प, (5) कभी नहीं ये पाँच स्तर का प्रयोग किया गया है। कोई भी उत्तर सत्य या असत्य नहीं है। छात्र अपनी स्वेच्छानुसार सही विकल्प का चयन करके (सही का चिन्ह) अंकित करते हैं।

2. सभी प्रश्न विविध रूप से छात्र एवं छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन करते हैं।
   - 2.1 इस परीक्षण के सभी प्रश्न पारिवारिक वातावरण से संबंधित हैं।
   - 2.2 प्रश्न का कोई भी उत्तर सत्य या असत्य नहीं है। छात्र स्वेच्छानुसार अपना उत्तर देते हैं।
   - 2.3 यह प्रश्नावली 16 वर्षो के छात्र एवं छात्रा हेतु निर्धारित की गई है।
   - 2.4 प्रश्नों का उत्तर देने हेतु 15 मिनट का समय निर्धारित किया गया है। इसकी विश्वसनीयता परीक्षण पुनर्परीक्षण के माध्यम से प्रमाणित है। इसकी उच्चविश्वसनीयता .81 है। तथा इसकी वैद्यता दक्षशिक्षाविद के द्वारा प्रमाणित है।

पारिवारिक वातावरण मापनी के सभी प्रश्न पञ्चसोपान में विभाजित हैं। जो निम्न लिखित है :

1. मित्र संबंधीय प्रश्न।
2. स्वतंत्रता संबंधीय प्रश्न।
3. समाजिकता संबंधीय प्रश्न।
4. संवेगात्मक संबंधीय प्रश्न
5. स्वतंत्र चिन्तन संबंधीय प्रश्न।

व्यावसायिक रूचि प्रपत्र

व्यावसायिक रूचि परीक्षण हेतु एस.पी. कुलश्रेष्ठा द्वारा निर्मित व्यावसायिक रूचि प्रपत्र का प्रयोग किया गया। इस परीक्षण की विश्वसनीयता 69 एवं वैधता 81, 63 एवं 65 पाये गये।

शैक्षिक उपलब्धि :-

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु कक्षा 10 के वार्षिक परीक्षाफल को आधार माना गया। इसके लिए विद्यालय के कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं से 10वीं के अंकपत्र की छायाप्रति प्राप्त की गई।

सांख्यिकीय विधि :-

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है :-

1. **सहसम्बन्ध (CORRELATION**

$$r = \frac{\frac{\sum X^1 Y^1}{N} - CY \, x \, CX}{QY \, x \, QX}$$

2. **मध्यमान (MEAN)**

$$\sum \frac{FX}{N}$$

3. **मानक विचलन (STANDARD DEVIATION)**

$$\text{S. D.} \sqrt{\sum \frac{Fd^2}{N} - (\sum \frac{Fd}{N})^2} \quad x \, I$$

4. **विचलन की प्रामाणिक त्रुटि (S.E.O.)**

$$\text{S. D.} \sqrt{\frac{Q1^2}{N1} + \frac{Q2^2}{N2}}$$

$$= \sqrt{\frac{01^2}{N} + \frac{02^2}{N2}}$$

5. **क्रांतिक निष्पत्ति (C.R.)**

$$C.R. = \frac{M1 - M2}{S.E.D.}$$

परिणाम :-

1. छात्र एवं छात्राओं के परिवारिक वातावरण का साहित्यिक रूचि, वैज्ञानिक रूचि, प्रशासनिक रूचि, वाणिज्यिक रूचि, रचनात्मक रूचि, कलात्मक रूचि, सामाजिक रूचि एवं गार्हस्थय रूचि का मान क्रमशः .44, .66, .50, .241, .24, .199, .64 एवं .76 है जो सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है।

1.1 छात्र एवं छात्राओं के परिवारिक वातावरण का कृषिकार्य रूचि एवं प्रेरक रूचि का मान क्रमशः .051,एवं .025 है जो सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।

2. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का साहित्यिक रूचि, वैज्ञानिक रूचि, प्रशासनिक रूचि, वाणिज्यिक रूचि, रचनात्मक रूचि, कलात्मक रूचि, सामाजिक रूचि एवं गार्हस्थय रूचि का सहसंबंध मान क्रमशः .46, .56, .49, .237, .26, .179, .68 एवं .79 है जो सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है।

2.1 छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का कृषिकार्य रूचि एवं प्रेरक रूचि स्तर का सहसंबंध मान क्रमशः .055,एवं .027 है जो सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक नहीं है।

3. छात्र एवं छात्राओं के व्यावसायिक रूचि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता :-

शिक्षा के साथ कौशल विकास पहली आवश्यकता है। हमारे प्रदेश में परम्परागत हुनर और कौशल रोजगार का सशक्त माध्यम है। कौशल उन्न्यन कर हम दूरस्थ अंचल तक रोजगार के अवसर बढ़ाने में सफल हो सकते हैं। वर्तमान समय में अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों में ऐसे कौशलों का विकास करना होगा जो उसे आय के माध्यम तलाशने के साथ ही संवेगों एवं आवेगों को सृजनात्मकता की ओर मोड़ सके। युवा पीढ़ी को ऐसे कार्य कौशल सिखाने पड़ेंगें जो उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना सके। कार्य कौशल विद्यार्थियों में ज्ञान, अभिरूचि और मूल्यों को व्यावहारिक रूप में लाने तथा उनमें आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, स्वजागरूकता बढ़ाने, निर्णय लेने में, तनाव व दबाब से जूझने, तथा जानकारी का उचित उपयोग करने में सहायक होते हैं। कौशल विकास एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है, जो हमें बढ़ ने और परिपक्व होने, स्वयं के निर्णयों पर विश्वास तथा स्वयं के भीतर तथा बाहर की सामर्थ्य शक्ति पहचानने में सहायक होते हैं। यह सकारात्मक व्यवहार की योग्यता है जिनसे व्यक्ति रोजमर्रा के जीवन की आवश्यकताएँ और चुनौतियों का सामना प्रभावी ढ़ंग से कर सकता है। विद्यालयीन शिक्षा कौशल विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, क्योंकि यह व्यक्ति के बड़े होने वृद्धि एवं विकास के दौरान विभिन्न अनुभवों से सामना कराती है। उसे सीखने तथा अभ्यास करने में अनेक अवसर प्रदान करती है। सामान्य शिक्षा का अर्थ है जो व्यक्ति को अधिक ज्ञानमय नागरिक और जीवन को जीने की कला सिखाती है। इसलिए इसमें ज्ञान, कौशल और व्यवहार सम्मिलित होता है। वर्तमान में प्रचलित शिक्षा की पद्धति सामान्य शिक्षा का ही एक रूप है। सामान्य शिक्षा पूर्ण नियोजित एवं निर्धारित होने से उनमें मानवीय अनुभवों का संचय होता है। इसमें शिक्षा के सभी पक्षों पर सामान्य ज्ञान प्रदान किया जाता है। यह शिक्षा व्यक्ति को धरातल पर खड़ा करती है, वहीं क्रियात्मक रूप में बौद्धिक क्षमताओं का निरंतर विकास करती है।

सामाजिक परिवर्तन का 'शिक्षा' एक प्रमुख अभिकरण है। सामान्य शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा परस्पर विपरीत प्रकृति की प्रतीत होती हैं परन्तु परस्पर सहयोगी भी हैं। एक दूसरे के अभाव में दोनों के अस्तित्व को पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। न तो व्यावसायिक शिक्षा जीवन को पूर्णता प्रदान कर सकती है और न ही सामान्य शिक्षा। इसलिए दोनों एक दूसरे की पूरक हैं। कुछ ऐसे ही कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था में समाहित हैं जिनके कारण भारतीय शिक्षा लोगों के लिए विशेष उपयोगी नहीं हो पा रही है। सामान्य शिक्षा ही व्यावसायिक शिक्षा का आधार है। सामान्य शिक्षा द्वारा ही बालक की क्षमताओं का आंकलन किया जाता है जिससे विभिन्न कार्य कौशल ग्रहण करने की योग्यता एवं क्षमता का पता लगाया जा सके, एवं व्यावसायिक शिक्षा की प्रक्रिया को ग्रहण किया जा सके। संपूर्ण शिक्षा के लिए व्यावसायिक शिक्षा व सामान्य शिक्षा का समन्वय आवश्यक है। चूँकि व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को किसी कार्य या व्यवसाय से संबंधित कौशल प्रदान करती है। आज विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में पुराने एवं अव्यवहारिक पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों की बढ़ ती निराशा, अनुशासनहीनता, बेरोजगारी, अपराध प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। स्वतंत्रता पश्चात् शिक्षा से संबंधित अनेक आयोगों, समितियों तथा नीतियों के फलस्वरूप शिक्षा प्रक्रिया को व्यावहारिक, प्रासंगिक तथा विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने के कुछ महत्वपूर्ण प्रयास हुए हैं। परन्तु कतिपय सफलताओं को छोड़कर सामान्यता वर्तमान शिक्षा प्रणाली पुस्तकीय ज्ञान

प्रदान करती है। शिक्षा की विषयवस्तु तथा विद्यालयों, महाविद्यालयों में शैक्षिक प्रक्रिया परिवर्तनशील कार्यजगत की आवश्यकताओं से पूर्णतया दूर है अतः बढ़ रही युवा जनसंख्या को रोजगार के अच्छे अवसर प्रदान करने के लिए उन्नत प्रशिक्षण एवं कौशल विकास महत्वपूर्ण है और बढ़ रही युवा जनसंख्या को रोजगार के अच्छे अवसर प्रदान करने के लिए उन्नत प्रशिक्षण एवं कौशल विकास महत्वपूर्ण है और उन्नति की गति को तीव्र बनाए रखने के लिए यह आवश्यक भी है।

उपसंहार :-

मानव प्रकृति का सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी तथा ईश्वर की अन्य रचनाओं में सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। इस तथ्य के मूल में 'शिक्षा' ही वह आधारभूत प्रक्रिया है, जिसमें मानव का पूर्ण विकास होता है। शिक्षा का उद्भव 'सृष्टि' में मानव के सृजन के साथ ही प्रारम्भ हो गया था। शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों में से एक प्रमुख उद्देश्य जीविकोपार्जन के लिये मार्गदर्शन करना भी है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु व्यावसायिक शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। व्यावसायिक शिक्षा की प्राप्ति के लिये व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जिसके अन्तर्गत छात्रों में श्रम के प्रति आदर व रुचि उत्पन्न करना व हस्तकला के कार्यों को महत्व देना परमावश्यक है। महात्मा गाँधी जी के अनुसार, ''शिक्षा को बेरोजगारी के विरुद्ध एक बीमा होना चाहिये।'' अर्थात् शिक्षा में व्यावसायिक दृष्टिकोण का होना अत्यन्त आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अस्थाना, विपिन, 1999 मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्याकन श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा - 2
2. माथुर, एस के, 2013, शिक्षा मनोविज्ञान विनो द पुस्तक मंदिर, आगरा
3. भार्गव महेश, 1990, आधुनिक मनो वैज्ञानिक एवं मापन, कचहरी, आगरा
4. शर्मा रमा एंव मिश्रा एम के, 2009 हिन्दी शिक्षण, अर्जु न पब्लिक शिक्षा हाउस, नई दिल्ली
5. सिंह, अरुण कुमार, 2013, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसी हाउस, दिल्ली
6. पाठक, पी.डी. 2009, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा ।
7. सिंह, अरूण कुमार उच्चतर सामान्य मनोविज्ञान पेज नं-753 से 754
8. बुच एम. बी. (1972, 1978), "सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एण्ड एजुकेशन" पृष्ठ 46-52
9. गाडनर जे. एस. (1940), "दी वुस ऑफ टर्म लेबल ऑफ एसपीरेशन सायलॉजिकल रिव्यू", पृष्ठ 59-68।
10. गोड़ एच.सी. (1973), दिल्ली के विद्यालय के छात्रों की "व्यवसायिक आकांक्षाओं कों प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", शोध आई. आई टी, न्यू दिल्ली।
11. घोष, एच. सी. (1974), किसी भी रचनात्मक आत्मकथा के अध्ययन को भारतीय स्कूलों में परामर्श की पद्धति बनाना, शोध प्रबंध कलकत्ता विश्वविद्यालय।
12. ग्रेवाल जे. एस. (1990), "व्यवसायिक वातावरण और शैक्षिक और व्यवसायिक पसंद" नेशनल सॉयकलाजिकल रिव्यू (आगरा)।
13. सिंह गुमान साहू (1997) "उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत सामान्य जाति एवं अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के छात्राओं की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन" पं .रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर।
14. ए.बी.जे.ओ. (1970) नाइजिरियन किशोरों का शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन जनरल ऑफ एजुकेशन एण्ड वोकेशनल मेजरमेंण्ट- 462 अगस्त वाल्यूम 4/1 पेज 55-67।
15. गुप्ता, एम.पी., गुप्ता, ममता (2009):- शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श, राखी प्रकाशन आगरा।
16. खुवेद और खॉन, रहमान (2007) :- दिल्ली के छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।